पढ़ना सीखने में

किताबों का महत्व

एकलव्य का प्रकाशन

पढ़ना सीखने में किताबों का महत्व

Padna seekhne mein kitabon ka mahatva

आलेखः अंजलि नरोना, वीणा भाटिया, तान्या सहगल

सम्पादनः रश्मि पालीवाल, शशि सबलोक

ले-आउट व डिज़ाइनः शशि सबलोक

आवरण चित्रः तरुण, होशंगाबाद

इस पुस्तिका में दिए गए चित्र एकलव्य की बाल पत्रिका चकमक से
या आलेखों में उल्लिखित किताबों से लिए गए हैं।

आईसीआईसीआई सेंटर फॉर एलीमेंटरी एजुकेशन के सहयोग से प्रकाशित एवं वितरित

संस्करणः नवम्बर 2008/15000 प्रतियाँ
पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2008/15000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः जनवरी 2012/........ प्रतियाँ
कागज़ः 70 gsm मेपलिथो एवं 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

ISBN: 978-81-89976-25-5
मूल्यः ₹ 25.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः 0755 - 2587 551

पढ़ना सीखना
और पढ़ने में पुस्तकों का महत्व

कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए कहानी की पुस्तकें! वे पुस्तकों से क्या करेंगे? वे तो अभी पढ़ना भी नहीं जानते, आप कहेंगे! ज़्यादा से ज़्यादा, आप सोचेंगे, पढ़ना सीखने के कठिन परिश्रम के बीच-बीच में बच्चों को मनोरंजन की आवश्यकता होती है – इन पुस्तकों से पढ़कर कहानी सुना दी तो उनका मनोरंजन हो जाएगा। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कक्षा 1 और 2 में बच्चों को समझकर पढ़ना नहीं आने का एक प्रमुख कारण यह होता है कि उनका पढ़ने की मज़ेदार सामग्री से परिचय ही नहीं हुआ होता है। ऐसी तालीम से बच्चों की समझ में यही आता है कि पढ़ना एक बेहद नीरस और बेमतलब की कवायद है।

दरअसल, पुस्तकों की भूमिका पढ़ना सीखने से पहले ही शुरू हो जाती है – ऐसी पुस्तकें जिन्हें सुनकर, जिनके चित्र देखकर बच्चों को लगे कि हाँ, पढ़ना भी कोई करने लायक चीज़ है। पुस्तकों में उन जैसे बच्चे शरारत करते हैं, उनमें जानवर हैं, नन्हे खरगोश हैं जो उन जैसे छोटे होते हुए भी शेर जैसे बड़े जानवरों को मात दे पाते हैं, खाने की मज़ेदार चीज़ें हैं और उन्हें चुपके से गप कर जाने की ललक भी है। ऐसी चीज़ें एक तरह से उनके करीब भी हैं और दूसरी जगहों व दूसरे समय में स्थित होने की वजह से कई नई बातें भी बताती हैं।

यदि ऐसी रोचक पुस्तकों से बच्चों का छोटी उम्र से ही परिचय कराया जाए तो उनमें पढ़ना सीखने की चाह जग उठेगी और पढ़ना एक

मतलब वाली क्रिया भी बनेगी। यह चाह अपनी राह खुद बनाएगी। जिन बच्चों के घरों में ऐसी पुस्तकें होती हैं और कोई बड़ा उन्हें रोज़ पढ़कर सुनाता है, वे धीरे-धीरे शब्द और फिर अक्षर भी पुस्तक में पहचानने की कोशिश करते रहते हैं। इस तरह वे शाला में मिले पढ़ने के ज्ञान (अक्षर, मात्रा, शब्द) को घर में पढ़ने के मायने भरे अनुभव से जोड़ पाते हैं। यों क्रमशः वे माहिर पाठक बनने लगते हैं। परन्तु हम जानते हैं कि हमारी शालाओं में आने वाले अधिकांश बच्चों को घर में पढ़ने का माहौल नहीं मिलता है। यदि इनकी करीबियत पुस्तकों से नहीं बन पाई तो वे अर्थ या मायने वाले पठन के अनुभव से वंचित रह जाते हैं। ये बच्चे भी माहिर पाठक बन सकें, इसके लिए शाला में ही पढ़ने-सुनाने के मज़ेदार अनुभव प्रदान करना शाला की ज़िम्मेदारी हो जाती है।

पुस्तकों से परिचय के इन शुरुआती दिनों में यदि आप शब्दों पर उँगली रखकर इन कहानियों को सुनाएँ और पुस्तक को इस तरह पकड़ें कि बच्चे भी आपकी उँगली चलती हुई देख सकें, तो उन्हें यह भी समझ में आएगा कि लिखाई का सीधा और उलटा किस ओर है और पढ़ा किस तरफ जाता है। जैसे हिन्दी और अँग्रेज़ी में बाएँ से दाएँ। साथ ही यह भी समझ में आएगा कि जो लिखा है उसका कोई मतलब भी है – अक्सर अनोखा और रोचक मतलब। उँगली रखकर पढ़ने से बच्चे लिपि का ध्वनि और उच्चारण से सम्बन्ध भी जोड़ पाएँगे। इन सबके साथ यदि कहानी में शब्दों और वाक्यों का दोहराव है तो बच्चे इसे पकड़ने, पहचानने और फिर स्वयं पढ़ने भी लगेंगे।

इस तरह से पुस्तकों से परिचय कराने का मतलब है बच्चों का परिचय लिपि व अर्थ के सम्बन्ध से और लिपि के नियमों से कराना। इसके लिए पुस्तकों का चुनाव ऐसा होना ज़रूरी है जिसमें बच्चों का मन लगे।

उम्मीद है ऐसी ही किताबों का चयन करने व उनका उपयोग करने में यह पुस्तिका आपका सहयोग करेगी।

अंजलि नरोना

अंजलि नरोना

किताबें करती हैं बातें

कहानियाँ बचपन का एक अभिन्न अंग हैं। चाहे वे खुद गढ़कर सुनाई गई हों या पुस्तकों से पढ़कर। कविता और गीत भी बच्चों की भाषा का एक अहम हिस्सा हैं। इसी तरह चित्रों की दुनिया है, जो बचपन को रंगों से भर देती है। सभी बच्चों की रुचियाँ अलग-अलग होती हैं। रुचियाँ उम्र के हिसाब से भी बदलती हैं और व्यक्तित्व और सन्दर्भ के हिसाब से भी। यदि हर बच्चे को अपनी पसन्द की कुछ पुस्तकें मिल जाएँ तो पढ़ने में उनकी इतनी रुचि पैदा हो जाएगी कि पढ़ना सीखने का आधा काम मानो हो ही गया। हमारे सामने चुनौती यह है कि हमारे पास पुस्तकों की पर्याप्त विभिन्नता हो ताकि हर बच्चे को अपनी पसन्द की पुस्तक मिल सके। कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए पुस्तकें चुनने में मदद करने वाली कुछ बातें हम यहाँ आपके सामने रख रहे हैं।

कहानियों की विषयवस्तु

इस उम्र के बच्चे जानवरों से बहुत लगाव रखते हैं, खासकर जानवरों के बच्चों से। *मैं भी, चूहे को मिली पेंसिल, बोबक बकरा* और *बुढ़िया की रोटी* कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें जानवर बोलते हैं, भले ही उनके नाम न हों।

बाघ का बच्चा तकदीर, महागिरी और *मेंढक और साँप* जैसी कहानियों

में जानवर बोलते नहीं हैं। कुछ लोगों का मानना था कि बोलते हुए जानवर बच्चों को भ्रमित करेंगे। परन्तु अब यह स्थापित हो चुका है कि इन चीज़ों से बच्चों को कोई खास फर्क नहीं पड़ता, बशर्ते कहानी रोचक हो। बच्चे अपने हमउम्र बच्चों की कहानियाँ भी खूब पसन्द करते हैं।

कहानी की रोचकता मुख्यतः तीन चीज़ों से बनती है।

चित्रः अतनु राय

एक चीज़ तो यह है कि कहानी में क्या समस्या या द्वन्द्व है? वह किस तरह से स्थापित किया गया है? इस द्वन्द्व या समस्या का निदान क्या है?

दूसरी चीज़ है कहानी के मुख्य पात्र और बच्चों से उनके सम्बन्ध बन पाना।

तीसरी चीज़ है कहानी का एक सूत्र में बँधे रहना और बच्चों के ध्यान की सीमा के अन्दर ही रहना।

लालू और पीलू में एक छोटी-सी समस्या है – लालू का गलती से लाल मिर्च खा लेना। यह समस्या चौथे पन्ने पर ही स्थापित हो जाती है। अन्त में प्यारा-सा निदान हैः पीलू का अपने भाई को गुड़ देना। छोटी-सी समस्या का प्यारा-सा यह निदान और साथ में पात्रों का चूज़े होना, इस कहानी को लोकप्रिय बना देता है।

मैं भी कहानी में भी पात्र हैं चूज़ा और बतख का बच्चा, जिनसे इस उम्र के बच्चे अपने आपको जोड़ पाते हैं। *बाघ का बच्चा, तकदीर* जैसी कहानियों में समस्या थोड़ी बाद में स्थापित होती है और जल्दी ही सुलझ भी जाती है।

बच्चों की एक और लोकप्रिय कहानी है *महागिरी* जो चालीस सालों से छप रही है। यह अन्य कहानियों से काफी हटकर है। इस कहानी की उलझन या समस्या बीच कहानी में स्थापित होती है जब महागिरी नामक हाथी गड्ढे में खम्बा गाड़ने से इन्कार कर देता है। कहानी के अन्त में वह एक छोटी बिल्ली को बचाता है। शायद छोटे बच्चे इस छोटे जीव से अपने आपको जोड़कर देखते हैं। इसलिए यह कहानी आज भी छोटे बच्चों में इतनी लोकप्रिय है।

अधिकांश पुस्तकों की विषयवस्तु शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों की वास्तविकताओं से जुड़ी होती है। बहुत कम पुस्तकें गाँव के परिवेश को दर्शाती हैं। *लाल पतंग और लालू* और *भोर भई* दो ऐसी ही पुस्तकें हैं।

चित्रकहानी में चित्र

चित्रकहानियों के चित्रों में काफी विविधता होती है। कई पुस्तकों के चित्र वास्तविक शैली में हैं, जिनमें प्रकृति का बारीक अवलोकन झलकता है। कौआ डाल पर कैसे बैठता है, कैसे मुड़कर देखता है, जब उड़कर ज़मीन पर आता है तब उसका रूप कैसा होता है, यह *सोनाली का मित्र* में जगदीश जोशी के व *कौअे की कहानी* में युद्धजीत सेनगुप्ता के चित्र दर्शाते हैं। *महागिरी* में पुलक विश्वास के चित्रों ने वास्तविक शैली में भाव भी उकेरे हैं। भावों को चरम पर लाते हुए जानवरों और इन्सानों के चित्रों में भी विभिन्नता है। *मैं भी, घर और घर, बुढ़िया की रोटी, बारात, रूपा हाथी, दस* आदि कहानियाँ भी इसी विभिन्नता को दर्शाती हैं। कुछ किताबें, जैसे *मुफ्त ही मुफ्त, जादुई बर्तन,* तमिलनाडु और गुजरात की लोकशैलियों में हैं।
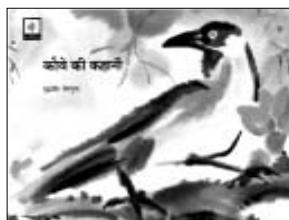
कुछ पुस्तकें छायाचित्रों पर आधारित हैं, जैसे *सागर, क्रिकेट, रिडले का रहस्य* आदि। कुछ अन्य कोलाज शैली में चित्रित हैं, जैसे *नन्हे चूज़े*

की दोस्त..., छोटा-सा मोटा-सा लोटा, रसोईघर, क्या सही क्या गलत आदि। इन सभी पुस्तकों के माध्यम से बच्चों के सामने चित्रों का संसार खुलता है, जिससे उनकी चित्रण क्षमता भी बढ़ती है।

बच्चों की कविताएँ

ध्वनियों की लय, ध्वनियों के खेल में छोटे बच्चे खूब मज़ा लेते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इनका कोई खास मतलब है या नहीं। जन्म से ही बच्चे किसी न किसी तरह लय का अनुभव करते हैं, चाहे वह थप्पी की लय हो, चाहे झूले की। शायद इसीलिए कहीं न कहीं उनमें तुकबन्दियाँ बनाने, ऊटपटाँग ध्वनियों से खेलने का स्वाभाविक गुण रहता है। यही तो छोटे बच्चों की कविता की जान होते हैं। जैसे,

अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा
चोर निकलकर भागा।

या फिर

अटकन चटकन दही चटाकन
बाबा लाए सात कटोरी
एक कटोरी फूट गई
बाबा की टाँग टूट गई।

कविता “रज्जू और कद्दू” में प्रतिभा नाथ की लय का एक अनोखा अन्दाज़ है। इस तरह के गीत अपने बचपन में किसने नहीं गाए!

लोक शैली के बालगीतों के दो संग्रह हैं – *अब्बक-दब्बक* और *अक्कड़-बक्कड़*। *महंगू की टाई* और *बतूता का जूता* सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की ऊटपटाँग कविताओं के दो मज़ेदार संग्रह हैं।

हिन्दी में बच्चों की अधिकांश कविताएँ वर्णनात्मक होती हैं। घटनात्मक

कविताएँ बहुत कम हैं। ऊटपटाँग कविताएँ, जिनमें बच्चों को मज़ा आए, तो बहुत ही कम हैं। निरंकारदेव सेवक की *नन्हे-मुन्ने गीत* में छोटी-छोटी कविताएँ हैं जो जानवरों पर आधारित हैं। इनमें वर्णन भी है, घटनाएँ भी हैं और लय भी है। एक झलकः

मुरगी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
बच्चे बोले चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें।

बतूता का जूता अनोखी और मज़ेदार घटनाओं का काव्य संग्रह है। इन कविताओं में कहीं तूफान में पैर से निकलकर जूता जापान पहुँच जाता है, तो कहीं मच्छर हाथी के कान में घुसकर गाना गाता है। या कहीं बन्दूक पिचकारी बनकर अलग-अलग चीज़ों में उलटे-सीधे रंग भर देती है। इस संग्रह में अँग्रेज़ी की लोकप्रिय कविताओं के अनुवाद भी हैं। "जॉनी जॉनी यस पापा" "रामू-रामू हाँ बापू" बन गई है और "बा बा ब्लैक शीप" कविता "बाबा भेड़ कलूटी" बन गई है।

रमेश थानवी की बाल कविताओं का संग्रह अपने आप में अद्‌भुत है। उनके कविता संग्रह में से एक छोटी-सी ऊलजलूल फन्तासी देखते हैंः

बस में बैठे बीस
बाहर निकले तीस
बीस तीस का चक्कर
समझ ना पाया कंडक्टर
सारी बस थी खाली
कंडक्टर था जाली

इसमें लम्बी घटनात्मक कविताएँ भी हैं जिनमें जूँ के कुनबे का लड़की

के सिर पर बसने या फिर रेलगाड़ी में नींद ना आने को भी थानवी ने बहुत ही मज़ेदार ढंग से रखा है। "रात के बारे में" कविता में अँधेरे में तारों का चित्र एक अनोखे ढंग से खींचा गया है।

कविताओं की खासियत यह है कि वे ध्वनि, दृश्य, महक, स्वाद और एहसास की दुनिया आबाद कर देती हैं। प्रायः ध्वनि-प्रधान कविताएँ ज़्यादा मिलती हैं। पर कुछ आँखों के सामने दृश्य खींच देती हैं, जैसे प्रयाग शुक्ल के संग्रह *होली* की कविता "गिलहरी"।
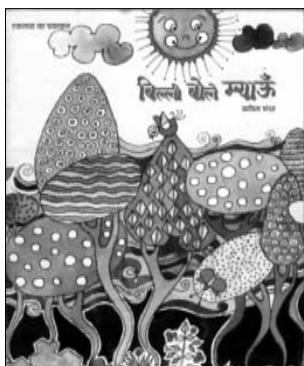
बिल्ली बोले म्याऊँ में विभिन्न तरह की कविताएँ हैं, जो तस्वीर खींचती हैं। जैसे "नाना-नानी", "फुग्गा" आदि। कविताएँ जिन्हें आगे बढ़ा सकते हैं, जैसे "क्या-क्या होता गोल" या "लम्बा क्या-क्या", या फिर ऐसी कविताएँ जिनमें खाने की चीज़ें जोड़ी या बदली जा सकती हैं, जैसे "बन्दर मामा" या "जामुन"।

और अन्त में यह कि अधिकांश बच्चों की कविताओं में जो दोहराव रहता है और उनमें जो स्वाभाविक रुचि जागती है, इनके सहारे बच्चे बहुत आसानी से पढ़ना सीख सकते हैं। *दूध-जलेबी जग्गग्गा* और *क्योंजी बेटा रामसहाय* ऐसे ही दो कविता संग्रह हैं।

कुल मिलाकर इस उम्र के लिए उपलब्ध बाल साहित्य चित्र-पुस्तकें, लोककथाएँ और कविताएँ हैं, जो बच्चों में पढ़ने की ललक पैदा करती हैं, उनमें इस छोटी-सी उम्र में पढ़ना सीखने की चाह जगाती हैं। इससे पढ़ना सीख पाने की मेहनत आधी हो जाती है।

वीणा भाटिया, तान्या सहगल

अँग्रेज़ी से अनुवादः भरत त्रिपाठी

पुस्तकालय विवरणिका

छोटे बच्चों के लिए उपयोगी किताबों व गतिविधियों हेतु मार्गदर्शिका

साक्षरता बढ़ाने और भाषाई क्षमताएँ विकसित करने के माध्यम के रूप में समूह-आधारित पुस्तकालय भारत भर में लगातार लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं। यह लेख ग्रन्थपालों और पुस्तकों में दिलचस्पी रखने वाले शिक्षकों को ध्यान में रखकर रचा गया है। पुस्तकालयों या कक्षाओं में किन पुस्तकों और गतिविधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए, इसके लिए एक शुरुआती बिन्दु के रूप में इस लेख का प्रयोग किया जा सकता है। पुस्तकालय शुरू करने की प्रक्रिया में अक्सर पाठ्यक्रम तैयार करने के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल होता है। यह लेख एक पुस्तकालय बनाने के काम में शामिल सामाजिक प्रक्रियाओं की रूपरेखा तो प्रस्तुत नहीं करता, परन्तु आशा है कि इससे स्थापित पुस्तकालयों को ज़्यादा से ज़्यादा उपयोगी बनाने में मदद मिलेगी। यहाँ दिए गए सुझाव कुछ ऐसी निजी धारणाओं पर आधारित हैं जो समूह-आधारित और शाला-आधारित पुस्तकालयों में कई साल काम करने के अनुभव से सही साबित हुई हैं।

पहली धारणाः पुस्तकालय सिर्फ शैक्षिक संस्था ही नहीं होती, बल्कि

सामाजिक संस्था भी होती है। जहाँ एक ओर हम उम्मीद करते हैं कि पुस्तकालय ऐसी जगह होगी जहाँ बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे, वहीं दूसरी ओर पुस्तकालयों में ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश भी होती है जिसमें बच्चा स्वतंत्र, निश्चिन्त और खुश रह सके। अपने साथियों के साथ आत्मविश्वास से और खुशी से मिलना-जुड़ना अपने-आप में महत्वपूर्ण होता है, और इससे शैक्षिक लक्ष्यों की ओर बढ़ने में भी मदद मिलती है। आदर्श स्थिति तो तब होगी जब स्थानीय लोग भी पुस्तकालयों से जुड़कर अपनी प्रतिभाओं, ज्ञान और कलाओं को बच्चों के साथ बाँटें। इस तरह, पुस्तकालय एक ऐसा सामाजिक वातावरण बनाने में मदद कर सकता है जहाँ मज़ा भी आए, साथ ही पढ़ाई को भी बढ़ावा मिले।

दूसरी धारणा: पुस्तकालय का प्रयोजन सिर्फ किताबें मुहैया कराने से कहीं ज़्यादा हो सकता है। पढ़ने की आदत विकसित करना पुस्तकालय के प्रमुख लक्ष्यों में एक है, परन्तु यह ज़रूरी है कि इस प्रक्रिया के सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाए। भाषाई कौशल विकसित करने के बाद पढ़ने की बारी आती है और सभी प्रकार की अभिव्यक्तियों को बढ़ावा देने से ही भाषाई कौशल विकसित होता है। इन सब के साथ सबसे ज़रूरी बात है बच्चे में पढ़ने के प्रति लगाव पैदा करना। ज़रूरी नहीं कि सिर्फ किताबों के द्वारा ही ऐसा हो पाए। इसलिए हमने चित्रकला से लेकर कहानी कहने तक, सभी तरीकों को पुस्तकालय से जुड़ी क्रियाओं में शामिल किया है। इससे पढ़ने के प्रति बच्चे की रुचि बढ़ने के साथ ही उसकी खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता को विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

तीसरी धारणा: बच्चा सबसे अच्छे से तब सीखता है जब इसमें उसकी विभिन्न इन्द्रियों का इस्तेमाल होता है और जब उसे कई अलग-अलग तरीकों से पढ़ाया जाता है। अक्सर, किसी निश्चित विषय पर प्रस्तावित गतिविधियाँ चार या पाँच तरीकों से अमल में लाई जा सकती हैं।

उदाहरण के लिए, उस विषय को चित्रित कर, गाकर, पढ़कर, और अभिनय करके। यद्यपि यह ज़रूरी नहीं है कि इनमें से प्रत्येक विधि को हर बार आज़माया जाए, परन्तु ज़रूरी है कि इन विधियों में परिवर्तन किया जाता रहे और बच्चों की सभी इन्द्रियों को सक्रिय किया जाता रहे ताकि उनकी रुचि और उत्साह बना रहे।

अन्तिम धारणा: पुस्तकालय उपयोगी होते हैं। बच्चे के विकास और उसकी पढ़ाई को प्रोत्साहन देने के लिए उसके जीवन में कई संस्थाएँ और समूह (स्कूल, परिवार) मौजूद हैं। पुस्तकालय इन संस्थाओं के पूरक के तौर पर तो काम करता ही है, साथ ही बच्चे को ऐसी जगह भी सुलभ कराता है जहाँ कक्षा के ढाँचों से मुक्त रहकर वह अलग-अलग प्रकार की गतिविधियों में भाग ले सकता है। ये किताबें और गतिविधियाँ उसकी पाठ्यपुस्तक (अक्सर बच्चे द्वारा प्रयोग की जाने वाली अकेली किताब) के सीमित दायरे से आगे जाती हैं। पुस्तकालय विभिन्न संस्कृतियों और विचारों के बारे में जागरूकता पैदा करते हैं, और इस तरह बच्चे के लिए एक नई दुनिया के द्वार खुलते हैं।

चित्रः कनक

गतिविधियाँ और स्पष्टीकरण

नर्सरी से केजी-II

चित्रकथाएँ

चित्रकथाओं का सीधा-सा अर्थ है – सिर्फ चित्रों द्वारा कही गई कहानियाँ। ऐसी किताबें पढ़ने की बुनियाद रखती हैं क्योंकि ये सजीव और प्रेरित करने वाले चित्रों द्वारा बच्चों में कहानी के प्रति लगाव पैदा करने का काम करती हैं। साथ ही, चित्रकथाएँ भाषाई सामर्थ्य विकसित करने वाली कई अन्य गतिविधियों के लिए उत्साहित करने का काम कर सकती हैं।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. शिक्षक बच्चों को चित्र दिखाते हैं और उन्हें छूट देते हैं कि चित्र देखकर वे जो भी समझे हों उसे कहानी में व्यक्त करें। उनके कहानी कहने के बाद उसमें आई बातों पर चर्चा शुरू की जा सकती है।
2. कहानी का जो भी पक्ष बच्चों को अच्छा लगा हो वे उसका चित्रण कर सकते हैं।
3. शिक्षक कहानी के किसी चित्र के आड़े-तिरछे खण्डों की चित्र-पहेली बनाकर हल करने के लिए बच्चों को दे सकते हैं।
4. ऐसी अन्य पहेलियाँ भी बनाई जा सकती हैं जिनके हल कहानी में आई खास वस्तुएँ हों।
5. सजीव दृश्यावली: बच्चे कहानी के किसी हिस्से या वस्तुओं का सजीव निरूपण करें।
6. कार्डों की गतिविधियाँ:

चित्रः अतनु राय

क. एक चित्रकथा में आई चीज़ों को काटकर उनके अलग-अलग कार्ड बना लें। ऐसे कार्डों

के कई समूह बना लें। हर बच्चे को एक-एक कार्ड दे दें। फिर पूरी कक्षा में घूमकर ऐसे बच्चों को ढूँढें जिनके कार्डों को आपके कार्ड से मिलाकर तस्वीर को पूरा किया जा सके।

ख. कार्डों के एक अन्य समूह का उपयोग भी जोड़ मिलाने के खेल में किया जा सकता है। पर इस बार बच्चे वस्तुओं के चित्रों के साथ शब्दों का मेल बैठाएँगे। चुने गए शब्द चित्रकहानी से ही प्रेरित होंगे।

लघुकथाएँ

यद्यपि लघुकथाएँ शब्दों द्वारा कही जाने वाली कहानियों से बच्चों का परिचय कराती हैं, पर कहानी कहने के लिए ये चित्रों पर बहुत निर्भर करती हैं। बच्चों के समूह के सामने इन किताबों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए ज़रूरी है कि शिक्षक पाठ से बखूबी परिचित हो ताकि वह बच्चों को चित्र दिखाते हुए ऊँची आवाज़ में कहानी कहता भी जाए। चूँकि ये कहानियाँ बहुत छोटी होती हैं, अतः पूरी कहानी भी बोर्ड पर लिखी जा सकती है। इससे बच्चों को बोर्ड पर लिखे शब्दों, सुनाई दे रहे शब्दों और चित्रों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिल सकती है।

चित्रः बबलेश

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. ऐसे शिल्पकार्य करवाए जाएँ जो कथा-पुस्तक के सारतत्व, उसकी विषयवस्तु तथा चरित्रों या दृश्यों का चित्रण करते हों। ये गतिविधियाँ किसी भी प्रकार की पाठ्यसामग्री के साथ की जा सकती हैं और पढ़ने की प्रक्रिया में कई इन्द्रियों को शामिल करने में सफल होती हैं।

क. कागज़ को विभिन्न मोड़ देना (ओरीगैमी): कागज़ों को अलग-अलग मोड़ देकर कहानी के चरित्रों की पुनर्रचना करें।

ख. मुखौटेः विभिन्न रंगों के कागज़ का इस्तेमाल करके मनुष्यों या जानवरों के चेहरों के त्रि-आयामी मुखौटे बनाएँ।

ग. मिले-जुले चित्रः किसी भी प्रकार की और सभी सुलभ सामग्री का उपयोग करके कहानी के किसी दृश्य का चित्रण करें।

घ. पत्तियों से चित्रः विभिन्न प्रकार की पत्तियों का इस्तेमाल करके जानवर, फूल या अन्य चीज़ें बनाई जा सकती हैं।

च. पत्तियों से कहानीः विकल्प के रूप में, बच्चों को तरह-तरह की बहुत-सी पत्तियाँ दी जा सकती हैं। इन पत्तियों से बच्चे कहानी से सम्बन्धित चित्र बनाएँ। सिर्फ पत्तियों के अंकन से ही वे ज़रूरी आकार और रेखाएँ भी बनाएँगे।

छ. मोहर पैड वाली चित्रकारीः कई माध्यमों का उपयोग करने वाली इस गतिविधि में स्याही के पैड में उँगलियाँ दबाकर कागज़ पर उनके निशान छाप सकते हैं। उँगलियों की छापों से कहानी के चित्र बनाए जा सकते हैं जिन्हें स्कैच पैन द्वारा पूरा किया जा सकता है।
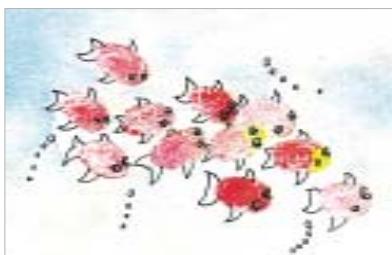
चित्रः मृदुला

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

ज. पुतलियाँः मुखौटों की तरह कागज़ का इस्तेमाल करके कहानी के किसी किरदार की पुतली बनाएँ। कहानी सुनाने में इन पुतलियों का उपयोग किया जा सकता है।

झ. मिट्टीः मिट्टी के द्वारा बच्चों को कहानी से स्पर्श के संवेदन के साथ जुड़ने का मौका दिया जा सकता है।

2. आलेखी संगठकः कहानी के टुकड़ों को समझने में बच्चों की मदद के लिए आलेखी संगठक बनाए जा सकते हैं जो पाठ में दी गई जानकारी को दृश्य रूप में पेश करते हैं। उदाहरण के लिए, *लालू और पीलू* कहानी में दोनों नायकों, लालू और पीलू की अपनी विशिष्ट चारित्रिक विशेषताएँ हैं – लालू को जहाँ सिर्फ लाल रंग का भोजन ही पसन्द आता है, वहीं पीलू को सिर्फ पीले रंग का। इसे निरूपित करने के लिए एक सारणी बनाई जा सकती है जिसमें एक ओर लालू को रखा जाए और दूसरी ओर पीलू को। इन दो नामों के विस्तार में क्रमशः लाल और पीले भोज्य पदार्थों के अनेक चित्र बनाए जा सकते हैं और उनके नाम लिखे जा सकते हैं। ऐसे आलेखों की मदद से कहानी अधिक बोधगम्य हिस्सों में बँट जाती है।

अपेक्षाकृत लम्बी कहानियाँ

लम्बी कहानियों द्वारा अपेक्षाकृत जटिल और सामाजिक रूप से प्रासंगिक कथाएँ कहने की सम्भावना होती है। इन कथाओं को कई बार कहने की ज़रूरत पड़ती है (कभी-कभी आठ या नौ बार तक!) ताकि बच्चों को कहानी अच्छी तरह समझ आए और उसका अधिक आनन्द आए। ये किताबें बार-बार पढ़ी जाएँगी, अतः ज़रूरी है कि क्षेत्रीय और कलात्मक विविधता प्रदान करने वाली किताबें चुनी जाएँ। यानी सौन्दर्यबोध की विभिन्न शैलियों के चित्र इस्तेमाल करने वाली किताबें और विभिन्न बोलियों में लिखी गई किताबें, बच्चों को कला और भाषा के विस्तार से परिचित कराने में मदद कर सकती हैं।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. चित्रकारीः लम्बी कहानियों में एक वस्तु के चित्रण से आगे बढ़कर एक पूरा दृश्य चित्रित करना सम्भव होता है। हर बच्चा चित्र बनाने

के लिए कहानी से एक दृश्य चुन सकता है। एक बच्चे द्वारा बनाए गए चित्रों के क्रम को देखकर दूसरों को कहानी की कथावस्तु समझ आनी चाहिए।

बच्चे सिर्फ एक वस्तु न बनाएँ बल्कि एक पूरे दृश्य का चित्रण करें। छात्रों को एक-दूसरे के चित्र देखकर यह बता सकना चाहिए कि कहानी में क्या हो रहा है।

चित्रः अतनु राय

2. चर्चाः चर्चा शुरू करने के लिए शिक्षक/ग्रन्थपाल बच्चों से मौखिक सवाल पूछ सकते हैं। सवाल सामान्य होने चाहिए जो कहानी की परिस्थितियों को बच्चों की ज़िन्दगियों से जोड़ते हों। अगर कहानी की समझ जानने के लिए प्रश्न पूछे जाएँ तो उनका प्रयोजन चर्चा की शुरुआत करना होना चाहिए, न कि बच्चों को कहानी के छोटे-छोटे ब्यौरे याद रखने हेतु चिन्तित कर देना।

गीतों/कविताओं की किताबें

छोटे बच्चों को कविताएँ और गाने सुनना-सुनाना अच्छा लगता है। यह गतिविधि तब और सार्थक हो जाती है जब शिक्षिका ऊँची आवाज़ में कविता पढ़ते हुए दिखाई जाने वाली सहायक सामग्री (जैसे पोस्टर) में उस शब्द की ओर इशारा करती है जिसे वह पढ़ रही होती है।

पहली और दूसरी कक्षा

कहानियाँ और कथा-वर्णन

इस आयुवर्ग के बच्चों में बहुत ध्यानपूर्वक और लम्बी अवधि तक सुनने की क्षमता होती है, पर वे बोलने में झिझकते हैं। उन्हें कहानी सुनाना खास तौर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें उन पर ज़ोर से बोलने की मज़बूरी नहीं होती, और वे भाषा की विविधता और सुन्दरता से परिचित

होते जाते हैं। उद्देश्य यह है कि छोटे बच्चे भाषा को अपना लें और धीरे-धीरे खुद भी बोलना सीखें, भले ही वे किसी भी भाषा या बोली का इस्तेमाल करें।

ऊँची आवाज़ में प्रभावी ढंग से कहानी कहने के लिए कुछ बातें दिमाग में रखना ज़रूरी हैं। पहली बात, पाठक जिस किताब को ऊँची आवाज़ में पढ़ रहा हो उससे वह पूर्णतया परिचित हो। ऐसा होने पर पाठक बच्चों को चित्र दिखा पाता है, भाषा के प्रयोग में लचीलापन बनाए रख पाता है, और कहानी के प्रदर्शन पर पूरा ध्यान रख पाता है। इन कहानियों के लिए चित्र उतने ही अनिवार्य होते हैं जितने कि शब्द। अतः बच्चों को चित्र दिखाने के बाद पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए ताकि वे इनमें सम्बन्ध स्थापित कर सकें। अगली बात, पहली बार कहानी कहते समय ज़्यादा मुश्किल शब्दों को बदलकर उनकी जगह आसान शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि बच्चे कहानी का भावार्थ समझ सकें। जब बाद में कहानी दोहराई जाए तो मूल शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि एक बार कहानी समझ लेने के बाद बच्चे सन्दर्भ संकेतों द्वारा इन मूल शब्दों का अर्थ भी समझ लेंगे। आखिरी बात, अगर जोश के साथ पाठ पढ़ा जाए तो बच्चे के लिए वह एक जीवन्त अनुभव होता है और फिर वह कहानी उन बातों की श्रेणी से पूरी तरह अलग होकर खास हो जाती है जिन बातों को रटकर दोहराया जाता है और बाद में भुला दिया जाता है।

ऐसी कहानियाँ पढ़ी जानी चाहिए जो बच्चों को उनकी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करने का मौका देती हों। ऐसे विषयों पर लिखी गई किताबों को प्रयोग में लाना चाहिए जिनसे बच्चे अनभिज्ञ हों, क्योंकि उनकी ज़ोरदार कल्पनाशक्ति से वे ऐसी किताब का भी मज़ा ले सकेंगे। या फिर, ऐसी कहानी का इस्तेमाल बच्चों को किसी नई संस्कृति, नए विचारों या नए तथ्यों से अवगत कराने के लिए भी किया जा सकता
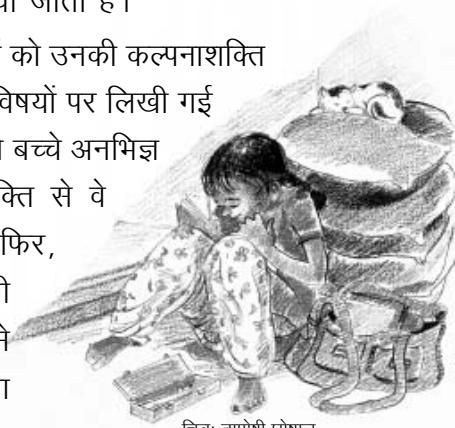
चित्रः तापोषी घोषाल

है। कहानी चुनते समय जो एक और बात ध्यान में रखनी चाहिए वह है कहानी में प्रयोग की गई भाषा। इस्तेमाल किए गए शब्द न तो बहुत कठिन होने चाहिए, न ही बहुत सरल। विभिन्न किताबों की भाषा में विविध शैलियाँ और व्याकरण संरचनाएँ होनी चाहिए।

कहानी सुनाने के बाद होने वाली चर्चा भी बहुत महत्वपूर्ण है। किसी शिक्षक या ग्रन्थपाल के मार्गदर्शन में होने वाली प्रभावी चर्चा किसी पुरानी कहानी में नया आयाम जोड़ सकती है। इस उम्र में बच्चों में बोलने को लेकर झिझक होती है। इसलिए कहानी के बारे में उनसे सवाल इस ढंग से पूछे जाने चाहिए कि उनके उत्तर विविध रूपों में दिए जा सकें (जैसे इशारे, भाव-भंगिमा, या किसी चित्र आदि के द्वारा)। जब बच्चे मौखिक उत्तर दें तो यह आग्रह नहीं किया जाना चाहिए कि वे स्कूल की माध्यम-भाषा का ही उपयोग करें। चूँकि अन्तिम उद्देश्य यह है कि बच्चे भाषा को आत्मसात करें, इसलिए किसी एक भाषा को दूसरी भाषा पर तवज्जो देना नुकसानदेह होता है।

दोनों चित्रः अतनु राय

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. वस्तुओं को लेकर कहानी बनाएँः बच्चों को कुछ ऐसी चीज़ें दी जाएँ जिनका आपस में कुछ सम्बन्ध हो और बच्चे समूह में काम करते हुए इन वस्तुओं के इर्द-गिर्द एक कहानी रचें।

2. शब्दों से कहानी बनाएँः ऐसे कार्डों का एक समूह बनाएँ जिन पर एक अक्षर और एक मात्रा लिखी हुई हो। कार्डों के ऐसे जोड़े ढूँढें जो आपस में मिलकर शब्द बनाते हों। ऐसे पाँच जोड़े ढूँढने के बाद उन शब्दों का

ऐसे चित्र को देखकर कहानी लिखने को कहा जा सकता है।

इस्तेमाल करते हुए एक कहानी बनाएँ।

3. नई वस्तुओं से परिचय कराएँः यदि कहानी में ऐसी किसी चीज़ की चर्चा की गई हो जिससे बच्चे अपरिचित हों (जैसे किसी किस्म का फूल, फल आदि), तो उस चीज़ को कक्षा में लाने की कोशिश करें। बच्चे उस वस्तु को छुएँ, उसका चित्र बनाएँ, चित्र को नाम दें और कई इन्द्रियों का इस्तेमाल करते हुए उस नई वस्तु को समझें।
4. वर्णमाला के खेलः बच्चे कहानी पढ़ें और वर्णमाला के कुछ निश्चित अक्षरों को कहानी में तलाशें (जैसे, ऐसे कितने शब्द हैं जो "क" से शुरू होते हैं या "क" पर खत्म होते हैं या जिनमें बीच में "क" आता है)।

ऊ

ऊन का गोला

ऊन का गोला
डोलता डोला
दीदी चिल्लाई
माँ पर झल्लाई
कहाँ रख दिया माँ
ऊन का गोला
पलंग के नीचे था
ऊन का गोला
मैं यहाँ पर हूँ
ऊबकर बोला
ऊन का गोला
डोलता डोला

- प्रभात

वर्णमाला के अक्षरों पर ऐसी कविताएँ बनाई जा सकती हैं।

काल्पनिक कथाएँ

पद्य और गद्य, दोनों ही रूपों में काल्पनिक कथाएँ मिलती हैं। ये ऐसी कहानियाँ होती हैं जिनके प्रमुख किरदार वास्तविकता की बजाय कल्पना से प्रेरित होते हैं। इस तरह की कविताओं और कहानियों को शामिल करने का प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि ये बच्चों की कल्पनाओं को ईंधन प्रदान करती हैं और बच्चे इन्हें बहुत पसन्द भी करते हैं।

कविताएँ

जब भी सम्भव हो, शिक्षक या ग्रन्थपाल को कविताएँ पढ़ते समय किसी दृश्य (जैसे कोई पोस्टर) और/या भाव-भंगिमाओं का भी सहारा लेना चाहिए। ज़रूरी नहीं है कि बच्चा कविता का "अर्थ" पूर्णतः समझ जाए, पर कविता के साथ इस्तेमाल की गई दृश्यमान वस्तुएँ या नाटकीय

भाव-भंगिमाएँ बच्चे की रुचि को बढ़ाती हैं।

महत्वपूर्ण है कि बच्चों को पढ़ाई जा रही कविताएँ कहानियों के विपरीत ऐसे विषयों पर होनी चाहिए जिनसे बच्चे परिचित हों। कविता किसी घटना के प्रति व्यक्ति की भावनात्मक प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति होती है। काव्य के पाठक/श्रोता के लिए उसका अर्थ तब निकलता है जब वह स्वयं के किसी अनुभव का काव्य के विषय से सम्बन्ध स्थापित कर सके। यदि बच्चा कविता के विषय से अनभिज्ञ है तो कविता अर्थहीन हो जाएगी। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि बच्चों को खाने से सम्बन्धित कविता पढ़ना अच्छा लगता है, पर किसी भारतीय बच्ची के लिए ब्लूबैरी फल पर लिखा गया प्रशंसा-गीत पढ़ना उतना रुचिकर नहीं होगा क्योंकि यह फल उसने शायद ही कभी चखा हो। तथापि, ऐसे तमाम विषय हैं जिनसे एक बच्चा परिचित होता है। इसलिए उपदेश देने वाली या देशभक्ति की सामान्य कविताओं तक ही सीमित रहने की कोई ज़रूरत नहीं है।

काव्य-इकाई के साथ चलने वाली गतिविधियाँ कहानियों के साथ चलने वाली गतिविधियों की तरह ही होती हैं क्योंकि इनका प्राथमिक उद्देश्य भी कविता की विषयवस्तु को जीवन्त करना, और पढ़ने को बहुइन्द्रीय अनुभव बनाना होता है।

गतिविधि की किताबें

गतिविधि की किताबें बच्चों को उन विषयों का विस्तार दिखाने की प्रक्रिया शुरू करती हैं जिनके लिए लिखित शब्दों का प्रयोग हो सकता है। कहानी कहने के साथ ही, किताबें बच्चे को उसकी रुचियों के अनुसार काम करने में मदद कर सकती हैं। कागज़ को विविध मोड़ देना, विभिन्न कलाएँ, हुनर और विज्ञान के प्रयोग, कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनके

कागज़ का यह खिलौना आसानी से बनाया जा सकता है।

चित्र: जितेन्द्र ठाकुर

लिए ये किताबें मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। इस उम्र में बच्चे खुद ही इन किताबों में दिए गए निर्देशों का अनुसरण कर सकते हैं। और इस तरह गतिविधि का मज़ा लेने के साथ-साथ उन्हें पढ़ने का अभ्यास भी मिलेगा।

जानकारी की किताबें

छोटे बच्चों के मन में बैठाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण बातों में प्रश्न पूछने की आदत होनी चाहिए। बच्चों में उठने वाली स्वाभाविक जिज्ञासा के चलते वे सभी चीज़ों के बारे में बहुत से सवाल पूछते हैं। ऐसा वातावरण बनाने के साथ ही जहाँ बच्चे सवाल पूछने के लिए स्वतंत्र हों, उन्हें यह सिखाना भी ज़रूरी है कि इन सवालों के जवाब कैसे मिलेंगे। शिक्षक, माता-पिता, इंटरनेट और जानकारी देने वाली किताबें कुछ ऐसे माध्यम हैं जिनसे बच्चा खुद ही अपने प्रश्नों के उत्तर ढूँढने की कोशिश कर सकता है।

एक प्रकार की सूचनापूर्ण पाठ्य सामग्री हैं वे किताबें जो किसी विषय विशेष के सम्बन्ध में तथ्य और जानकारी प्रदान करती हैं। ये किताबें उन विषयों को और गहराई से छूती हैं जिनसे बच्चे पहले से ही परिचित होते हैं। प्रयोगों के लिए और ऐसे विषयों के बारे में और ज़्यादा जानने के लिए शुरुआती बिन्दु की तरह इन किताबों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, *पानी ही पानी* में पानी के उपयोग से जुड़े मुद्दों के साथ ही पानी के विभिन्न रूपों और उपयोगों की चर्चा की गई है। पानी के इन स्रोतों के साथ बच्चों की सक्रिय भागीदारी वाली अनेक ऐसी गतिविधियाँ संचालित की जा सकती हैं जिनसे उनका रोज़ वास्ता पड़ता है। इस किताब का उपयोग स्वच्छता, सफाई-प्रबन्ध और जल संरक्षण के बारे में चर्चा शुरू करने के लिए भी किया जा सकता है।

चित्रः अतनु राय

सूचना का एक और बढ़िया स्रोत है समाचार-पत्र जो

सस्ता होने के साथ ही सर्वसुलभ भी है। समाचार-पत्रों के नियमित पाठक होने के असंख्य फायदे हैं। बच्चों को समाचार-पत्रों से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार की गई कुछ गतिविधियों की सूची नीचे दी गई है।

1. जो बच्चे लिखना सीख रहे हों वे सीधी रेखाएँ खींचने के अभ्यास के तौर पर हर पंक्ति को रेखांकित करने के लिए समाचार-पत्र का उपयोग कर सकते हैं।

2. कक्षा को एक कोरी तख्ती दें जिसके ऊपरी हिस्से पर बड़े अक्षरों में एक विषय लिखा हुआ हो (उदाहरण के लिए, कला, विज्ञान, भोपाल आदि)। इसके बाद बच्चे समाचार-पत्रों के ढेर में खोजबीन करते हुए शीर्षकों को पढ़ेंगे और लेखों पर सरसरी निगाह डालते हुए तय करेंगे कि कौन-से लेख तख्ती पर लिखे विषय से सम्बन्धित हैं। लेख ढूँढ लेने के बाद बच्चे उन्हें समाचार-पत्रों से काटकर पोस्टर बोर्ड पर चिपका सकते हैं।

3. समाचार-पत्र देखते समय बच्चे विज्ञापनों पर खास ध्यान दे सकते हैं। इसके बाद बच्चे अपने खुद के विज्ञापन भी बना सकते हैं।

4. सामयिक घटनाएँ: छात्र हर हफ्ते उनको रोचक लगने वाला एक समाचार या आलेख काट लें। इसके बाद वे बारी-बारी से कक्षा के समक्ष अपना समाचार प्रस्तुत करें। यह सामाजिक मुद्दों पर चर्चा प्रारम्भ करने का माध्यम भी है।

चित्र: अतनु राय

5. कुछ समय बाद, बच्चे उनके स्कूल या समुदाय में होने वाली घटनाओं पर आधारित अपना खुद का समाचार-पत्र बनाने के लिए तैयार और उत्सुक होंगे। ऐसे समाचार-पत्र में किसी "असली" समाचार-पत्र के

सभी अंग मौजूद हो सकते हैं। इसके अलावा उसमें बच्चों के समूह की रुचियों के अनुसार कुछ और भी जोड़ा जा सकता है।

6. छात्रों को सम्पादक के नाम पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जिनके द्वारा वे समाचार-पत्र में पढ़ी गई खबरों के बारे में अपने विचार और प्रतिक्रियाएँ ज़ाहिर कर सकते हैं।

शब्दकोष एक और उपयोगी किताब है, खास तौर पर किसी पुस्तकालय में। यद्यपि कई बच्चों को शब्दकोष इस्तेमाल करना कठिन लगता है, पर मौज-मस्ती की गतिविधियों में इसका बार-बार उपयोग किया जाना शब्दकोष में शब्द खोजने को अधिक आकर्षक बना सकता है।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. क्या आप X बनना चाहते हैं? X की जगह पर ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करना जिनके अर्थ बच्चों को शायद ही पता हों, और फिर बच्चों से पूछा जाना कि क्या वे X बनना चाहते हैं (उदाहरण के लिए, क्या आप लापरवाह बनना चाहते हैं? या, क्या आप घृणास्पद बनना चाहते हैं?)। बच्चों के जवाब बोर्ड पर उतारने के बाद बच्चों से उस शब्द को शब्दकोष में ढूँढने को कहा जाए। यह देखना बहुत मज़ेदार होता है कि इन शब्दों की परिभाषाएँ न मालूम होते हुए कितने लोगों ने कुछ अवांछनीय बनने को कहा और कितनों ने इसका उलटा कहा।

2. सबसे लम्बा वाक्य बनाएँ: इस खेल में बच्चे एक अर्थपूर्ण वाक्य बनाने के लिए शब्दकोष का उपयोग करेंगे। वह बच्चा "जीतेगा" जो सबसे अधिक ऐसे शब्द इस्तेमाल करेगा जिनकी परिभाषाएँ कक्षा को मालूम न हों।

   अन्त में, विश्वकोष-समूह बच्चों के लिए बहुत-सी रुचिकर जानकारी उपलब्ध कराता है। विश्वकोष असंख्य विषयों पर बुनियादी जानकारी प्रदान करते हैं, पर कभी-कभी इन्हें भयभीत कर देने वाली किताबों

के रूप में देखा जाता है। खेलों और अन्य गतिविधियों के सहारे विश्वकोषों से बच्चों को परिचित करवाने से ये सम्भवतः उतनी डराने वाली किताबें नहीं लगेंगी।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. सूचना की तलाशः एक प्रश्नावली बनाएँ जिसमें ऐसे प्रश्न पूछे गए हों जिनके उत्तर विश्वकोष के उचित लेख में ही ढूँढे जा सकते हों।
2. एक प्रविष्टि लिखेंः बच्चों से ऐसे विषय पर विश्वकोष का एक लेख लिखवाएँ जिसके बारे में वे काफी कुछ जानते हों (उदाहरण के लिए, भोपाल, इन्द्रधनुष आदि), और फिर उनकी प्रविष्टि की विश्वकोष की प्रविष्टि से तुलना करवाएँ।
3. प्रत्येक छात्र एक विस्तृत विषय चुनकर उस पर एक प्रस्तुति दे। विषय इतना विस्तृत होना चाहिए कि उसके सभी पहलुओं पर चर्चा करने के लिए विश्वकोष के दो या तीन लेख पढ़ना पड़ें।

तीसरी और चौथी कक्षा

इस उम्र में बच्चे काव्य, नाटक और गद्य में फर्क करना शुरू कर देते हैं। वे भाषा की बारीकियों के साथ ही इस बात का भी महत्व समझने लगते हैं कि एक विचार को भिन्न रूप में अभिव्यक्त करने से कैसे उसमें या तो कुछ नया अर्थ जुड़ जाता है या उसका अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार बच्चों के साथ कई शैलियों का प्रयोग किया जा सकता है।

कहानियाँ

इस उम्र में बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे अपने आप लघुकथाएँ पढ़ना शुरू करें। लेकिन कहानी के बाद विस्तृत प्रश्न नहीं होने चाहिए। इससे बच्चों का ध्यान प्रश्नों का उत्तर देने की ओर ही रहेगा और वे कहानी पढ़ने का मज़ा नहीं उठा पाएँगे। अगर यह पता

लगाना ज़रूरी ही हो कि बच्चे ने जो लिखा है उसे वह कितना समझ पाया है, तो अधिक व्यक्तिपरक मूल्यांकन ज़्यादा उपयुक्त साबित हो सकते हैं (उदाहरण के लिए, बच्चा एक चित्र बना सकता है या जो कुछ उसने अभी पढ़ा हो उसका पुनर्प्रदर्शन कर सकता है)।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. किताब से सम्बन्धित प्रश्नावलीः प्रत्येक बच्चे को एक किताब दी जाए और लगभग 5 मिनट तक बच्चे बारीकी से किताब का अवलोकन करें। फिर प्रत्येक बच्चा किताब को बन्द कर दे और किताब के बारे में – न कि कहानी के बारे में – तैयार किए गए कुछ प्रश्नों का उत्तर दे। प्रश्न इस प्रकार के हो सकते हैंः

   क. इस किताब की कीमत क्या है?

   ख. इसका लेखक कौन है?

   ग. प्रकाशक कौन है?

   घ. किताब का मुख्य किरदार कोई जानवर है, कोई व्यक्ति है या फिर कुछ और है?

   च. किताब में कितने पृष्ठ हैं?

   छ. किताब का पिछला आवरण किस रंग का है?

   यह खेल बच्चों के लिए न सिर्फ मज़ेदार है, बल्कि इससे उनका अवलोकन कौशल और निखरता है। इसके द्वारा बच्चों को लेखकों, प्रकाशकों आदि से परिचित कराकर किताब के अस्तित्व में आने की प्रक्रिया से भी पर्दा उठाने में मदद मिलती है।

चित्रः अतनु राय

2. किताब को नया नाम देंः इस गतिविधि में बच्चे अपनी पसन्दीदा कहानियों को नए शीर्षक देते हैं।

3. कहानी का अन्त फिर से लिखेंः इसमें बच्चे कहानी के अन्त को फिर से लिखते हैं या फिर उस जगह से कहानी को आगे जारी रखते हैं जहाँ लेखक ने उसे छोड़ा था।

4. पुनर्वर्णनः बच्चे नए दृष्टिकोण के साथ फिर से कहानी कह सकते हैं। कहानी को अलग समय और अलग जगह में स्थापित करके या इसी तरह के अन्य परिवर्तन करके वे ऐसा कर सकते हैं।

5. चित्रों का क्रम निश्चित करेंः बच्चों को चित्रों का एक समूह दिया जाता है और वे इन चित्रों को क्रमानुसार लगाकर कहानी बनाते हैं।

6. जब बच्चे पुस्तकालय की कई किताबें पढ़ चुके हों तो किताबों के शीर्षकों के साथ पहेलियों का खेल खेला जा सकता है।

7. शब्दावली के खेलः बच्चे सीखी गई शब्दावली की एक सारणी कक्षा में रख सकते हैं और इस सूची के शब्दों के साथ कई तरह के खेल खेल सकते हैं।

8. किताबों की समीक्षाएँः कक्षा या पुस्तकालय की दीवारों पर कोरे पोस्टर टाँग दिए जाएँ जिन पर बच्चे अपना नाम और उनके द्वारा हाल ही में पढ़ी गई किताब का शीर्षक, उसका मूल्यांकन और एक लघु समीक्षा लिख सकें।

लोककथाएँ

पंचतंत्र की कहानियाँ सबसे पुरानी और सबसे अधिक सुनाई जाने वाली कहानियों में से हैं। चूँकि ये कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रही हैं, अतः कई छात्र इनसे परिचित होते हैं। यद्यपि उन्होंने कभी इन कहानियों को कथा-पुस्तक की शक्ल में नहीं देखा होता है। कहानियों के साथ यह घनिष्ठता ऐसी किताबों के प्रति स्वाभाविक रुचि जगाती है।

चित्रः दुर्गाबाई व्याम

लोककथाओं के साथ कराई जा सकने वाली गतिविधियाँ हैं:

1. इन कथाओं का इस्तेमाल कहानी के काल और स्थान की संस्कृति के बारे में बात करने के लिए किया जाए। छात्र उस काल की चर्चा कर सकते हैं, उस समय की तस्वीरें देख सकते हैं, या फिर उस काल में प्रचलित भोजन, आभूषणों या वस्त्रों पर बात कर सकते हैं। बच्चे पंचतंत्र की कहानियों की भाषा, रीति-रिवाज़ों और राजनीति को परख सकते हैं और मौजूदा स्थिति से इनकी तुलना करते हुए दोनों में विषमता दिखला सकते हैं।
2. चूँकि कई पीढ़ियों के लोग इन कहानियों को जानते हैं, अतः परिवार और स्कूल के लिए एक बढ़िया तरीका होगा कि कुछ बच्चों के माता-पिता या दादा-दादी/नाना-नानी को स्कूल में आमंत्रित किया जाए और वे कक्षा को ये कहानियाँ सुनाएँ। तब बच्चे पारम्परिक मौखिक रूप और लिखित ढंग से कहानी कहने के तरीकों के बीच के अन्तरों की चर्चा कर सकते हैं।
3. लोककथाओं में अक्सर कई अन्धविश्वास शामिल रहते हैं। इन कहानियों को पढ़ते समय, यदि सम्भव हो तो कक्षा में अन्धविश्वासों की चर्चा करते हुए इन मिथकों को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

कविताएँ

1. कविता की विभिन्न पंक्तियों को पट्टियों के रूप में काट लें। इन्हें बच्चों के बीच में बाँट दें। फिर बच्चे इन पट्टियों को क्रम में लगाने का प्रयास करें और समझाएँ कि उन्होंने यह क्रम क्यों चुना।
2. खुद ऊँची आवाज़ में कविता पढ़ने और बच्चों को भी उसे चुपचाप पढ़ने का मौका देने के बाद शिक्षक बच्चों से एक विचारपूर्ण चित्र बनवाएँ जो कविता के भाव और कल्पना को साकार करता हो।
3. बच्चों को कविता की किताबें, समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ दी जाएँ

और वे इनमें से किसी एक ही विषय पर अलग-अलग कविताएँ ढूँढें और उनका संग्रह करें। बच्चे इस संग्रह को पढ़ें और चर्चा करें कि उन्हें कौन-सी कविता सबसे अधिक पसन्द आई और क्यों।

4. बच्चे अपनी पसन्दीदा कविताएँ दूसरे बच्चों के सामने ऊँची आवाज़ में हावभाव सहित पढ़ें।

लिखित अभ्यास

1. प्रत्येक बच्चे को एक पट्टी दी जा सकती है जिस पर कविता की एक पंक्ति हो और फिर वे बाकी की कविता खुद पूरी करने की कोशिश कर सकते हैं।
2. सभी बच्चे किन्हीं विषयों पर खुद कविताएँ लिख सकते हैं और उनके साथ चित्र भी बना सकते हैं। इन्हें एकत्रित करके एक किताब की शक्ल दी जा सकती है।
3. बोर्ड पर एक विषय लिखें। अब प्रत्येक बच्चे से वह पहला शब्द बताने को कहें जो उस विषय को जानने के बाद उसके दिमाग में आता हो। इन सभी सम्बद्ध शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिखें, और बच्चों से एक ऐसी कविता लिखने को कहें जिसमें उन्हें बोर्ड पर लिखे शब्दों का प्रयोग करना होगा। (उदाहरण के लिए, यह अभ्यास तब बढ़िया परिणाम देता है जब विषय कोई रंग होता है।)

नाटक

नाटक पढ़ने और उसके प्रदर्शन की प्रक्रिया भाषा को एक विस्तृत अर्थ देती है। ऐसा होने के कई कारण हैं। पहली बात तो यह है कि नाटक में भाषा के वे सभी रंग आ जाते हैं जिन्हें हम अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में इस्तेमाल करते हैं। इसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के वार्तालाप शामिल होते हैं। इसमें कई क्षेत्रों की विशिष्ट शब्दावली का उपयोग भी किया जाता है। दूसरी बात, नाटक मौखिक और अमौखिक दोनों ही तरह की अभिव्यक्ति को विकसित करता है।

जो बच्चे बोलने या लिखने में असहज हों, उन्हें नाटक द्वारा अभिव्यक्ति का मार्ग मिल सकता है। तीसरी बात, नाट्य-अभिनय बच्चे के अवलोकन सम्बन्धी कौशल को चमकाता है। शैलीबद्ध अभिनय में ज़रूरी होता है कि व्यक्ति मानव अनुभवों के सूक्ष्म भेदों का बारीकी से अध्ययन करे ताकि उनका अभिनय किया जा सके। चौथी बात, दर्शकों के समक्ष नाटक का प्रदर्शन करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अन्तिम बात, एक नाटक तभी सफल होता है जब उसमें अच्छा तालमेल हो। इस तरह बच्चे समूहों में रहकर प्रभावी ढंग से काम करना और सब की ज़रूरतों को स्वयं की ज़रूरतों से पहले रखना सीखते हैं। यह सब होते हुए भी एकदम से किसी नाटक का मंचन करना कठिन है। नीचे कुछ ऐसी गतिविधियाँ बताई गई हैं जो बच्चों को धीरे-धीरे सुगमता के साथ अभिनय की दुनिया में ले जाती हैं।

1. प्रदर्शित किए जा रहे नाटक के मुख्य किरदार निभाने के लिए कागज़ के मुखौटे या हाथ में रखी जाने वाली पुतलियाँ बनाएँ।

2. मूक अभिनय की गतिविधियाँः

   क. बच्चों को दो दलों में विभाजित किया जाता है। दोनों दल बारी-बारी से खेलते हैं। दल में से एक व्यक्ति एक पर्ची उठाता है और पर्ची में जो कुछ भी लिखा हो उसे उसको सिर्फ अभिनय से व्यक्त करना पड़ता है। उसके दल को अनुमान लगाना होता है कि वह क्या बता रहा है। यदि उसका दल निर्धारित समय में सही अनुमान लगा लेता है तो उन्हें 1 अंक मिलता है।

चित्रः अतनु राय

पर्ची में क्या लिखा होगा, यह कठिनाई के स्तर के मुताबिक बदल सकता है। जब पहली बार खेल हो तो पर्चियों में शायद सामान्य भाव-भंगिमाएँ ही लिखी होनी चाहिए। अगली बार की पर्चियों पर लोगों के नाम लिखे जा सकते हैं ताकि बच्चे एक-दूसरे की नकल करें। इसके बाद की पर्चियों पर सामान्य किताबों, फिल्मों, गानों या फिर अमूर्त चीज़ों (आशा, लालसा, दुख) के नाम लिखे जा सकते हैं। नियमों में बदलाव करके खेल को और कठिन भी बनाया जा सकता है, जैसे किसी एक बच्चे द्वारा सिर्फ एक भाव प्रदर्शित किए जाने की बजाय पूरा समूह एक दृश्य का अभिनय करे।

ख. बच्चों को दो वस्तुएँ दी जाती हैं। इन दो सहारों का इस्तेमाल करते हुए उन्हें कुछ क्रिया करना होगी और बाकी बच्चों को अनुमान लगाना होगा कि उसका क्या मतलब है। उदाहरण के लिए, यदि दो चीज़ें हैं – एक पैन और एक गत्ते का टुकड़ा – तो एक छात्र चित्र बनाने का अभिनय कर सकता है, जबकि दूसरा छात्र गत्ते को शीशे की तरह और पैन से काजल लगाने का अभिनय कर सकता है।

गाय

एक गाय का चित्र खींचता हूँ। वह गली में रहती है, वहाँ जहाँ कचरे के ढेर हैं। दिन भर वहीं मँडराती है। तुमने भी तो देखा होगा उसे? कचरा जल रहा होता है। धुएँ और आग में भी वह थूथन डाल देती है, भोजन का कोई टुकड़ा बचाने के लिए। क्या-क्या नहीं खा लेती वह! कागज़ और प्लास्टिक की पन्नियाँ – ये भी उसका भोजन हैं। और भी बहुत सारी अपथ्य वस्तुएँ। उसकी आँखों में आशा नहीं है। देह भूखी-सूखी है। तब भी वह जुटी रहती है अपने जीवन को कुछ और आगे खींचने की कोशिश में। एक गाय का चित्र खींचता हूँ।

- रुस्तम सिंह

चित्रः कनक

ऐसे चित्रों और पाठ्यसामग्री से सामाजिक मुद्दों पर चर्चा शुरू की जा सकती है।

टिप्पणीः दूसरे विषयों के क्षेत्रों में भी नाटकों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। जैसे कि किसी दृश्य का प्रदर्शन बच्चों और उनके परिवारों की ज़िन्दगियों को प्रभावित करने वाले सामाजिक मुद्दों के बारे में चर्चा शुरू करने का अच्छा तरीका हो सकता है।

इसके अलावा कभी-कभी ऐसे नाटक आयोजित करना बेहतर होता है जो लिखित नाटकों की बजाय कहानियों पर आधारित हों। ऐसा करने से बच्चों को स्वयं संवाद लिखने और बोलने का मौका मिलेगा। इससे उनका भाषाई कौशल विकसित होगा।

भाषा विकसित करने की अन्य गतिविधियाँ

भाषा के खेल

वर्गीकरण के खेल

1. एक अक्षर ("क") और एक वर्ग (जानवरों का) चुनें और सभी बच्चों को ऐसा एक जानवर बताने को कहें जिसका नाम "क" से शुरू होता हो। उत्तर नहीं सोच पाने वाला बच्चा खेल से बाहर हो जाएगा। खेल तब तक जारी रहेगा जब तक कि सिर्फ एक ही बच्चा बचा रह जाए।

2. बच्चों को एक वर्ग दिया जाए, और साथ ही उन्हें एक ऐसा अक्षर भी दिया जाए जिसे वे अपने उत्तरों में इस्तेमाल नहीं कर सकते। (इस खेल को और मुश्किल बनाने के लिए उन्हें एक से अधिक अक्षर भी दिए जा सकते हैं।)

3. बोर्ड पर चार से दस वर्ग लिख दिए जाते हैं और बच्चों को एक अक्षर दिया जाता है। सभी को उसी अक्षर से शुरू होने वाले ऐसे शब्दों की सूची बनानी होती है जो उस वर्ग में ठीक बैठते हों। पर इसमें अंक अनोखे उत्तरों को ही मिलते हैं (यानी मुझे अपने उत्तर के लिए तभी अंक मिलेगा यदि मैंने ऐसा उत्तर दिया हो जो अन्य

किसी ने न दिया हो)। इस तरह बच्चों को अनोखे और असामान्य शब्द सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है।

4. वर्गीकरण के एक दूसरे खेल में बच्चों को शब्दों की एक लम्बी सूची और वर्गों की एक सूची दी जाती है। उन्हें उचित व में उचित शब्द रखना होता है।

चित्रः अतनु राय

वर्णमाला के खेल

1. दो दलों में बँट जाएँ। एक अक्षर चुनें और फिर हर दल निर्धारित समय में चुने गए अक्षर से शुरू होने वाले जितने सम्भव हों उतने शब्द लिखे। जो दल ज़्यादा शब्द लिखेगा, वह जीत जाएगा।

2. वर्णमाला का पाँसा बनाएँ। बच्चे एक-एक करके पाँसा फेंकें। पाँसे में आने वाले अक्षरों से शुरू होने वाले शब्द बोलें। इन शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाएँ। वाक्यों से पूरी कहानी बनाई जा सकती है।

3. एक छात्र किसी शब्द के बारे में सोचकर बोर्ड के पास जाए और शब्द में मौजूद अक्षरों की संख्या दर्शाने के लिए बोर्ड पर खाली स्थान बनाए। बच्चे अक्षरों का अनुमान लगाएँ। सही अनुमान लगाने के साथ ही बोर्ड पर मौजूद छात्र उपयुक्त खाली स्थानों में अक्षर लिखता जाता है। पूरे शब्द को सबसे पहले पहचानने वाला बच्चा जीत जाता है।

मौखिक खेल

1. बच्चे एक-दूसरे से प्रश्न पूछें, पर उत्तर न दें। बच्चे तब खेल से बाहर हो जाते हैं जब वे प्रश्न पूछना भूल जाते हैं और उसकी बजाय कोई घोषणात्मक वाक्य कह देते हैं।

2. एक बच्चा एक पर्ची उठाता है और फिर गोले के बीच में आ जाता है। यह पता लगाने के लिए कि पर्ची में लिखी वस्तु क्या है, बाकी

बच्चे उससे “हाँ” या “नहीं” वाले सवाल करते हैं। जो सबसे पहले सही अनुमान लगाएगा उसे अगली पर्ची उठाने का मौका मिलेगा।

शब्दों की पहचान करना

1. बच्चों को समाचार-पत्र या पत्रिकाएँ दें और इनमें ढूँढने के लिए शब्दों की एक सूची दें। शब्द को काटकर कागज़ पर चिपका दें।
2. कार्डों का एक ऐसा समूह बनाएँ जिसमें आधे कार्डों पर शब्द और बाकी आधे कार्डों पर इनसे मेल खाते चित्र बने हों। सभी कार्डों को ज़मीन या मेज़ पर उलटा रख लें। बच्चे बारी-बारी से दो कार्डों को सीधा करेंगे। यदि शब्द और जोड़ मिलते हैं तो बच्चे कार्ड अपने पास रख लेंगे, नहीं तो वापस उसी जगह पर उलटा रख देंगे। अन्त में जिसके पास सबसे अधिक कार्ड होते हैं वह जीत जाता है। इस खेल में बच्चों को न सिर्फ यह पता होना चाहिए कि कौन-से कार्ड मेल खाते हैं, बल्कि उन्हें यह भी याद होना चाहिए कि कौन-से पत्ते कहाँ रखे हैं। जोड़े बनने के तरीके के आधार पर यह खेल कई बदलावों के साथ खेला जा सकता है। उदाहरण के लिए, वर्णमाला के अक्षरों के साथ खेलते समय जोड़ा तब बनेगा जब अक्षरों को मिलाने पर एक शब्द बन जाएगा।
3. बच्चों के सामने अक्षरों की कतारों से बना वर्ग रखें। उनके लिए पहेली यह होती है कि उन्हें इनके भीतर ही आड़े में, खड़े में, और तिरछे में बनने वाले शब्दों को ढूँढना होता है।

कहानियाँ बनाना

1. अनोखी वस्तुएँ लाएँ और बच्चों से उस पर कहानी लिखवाएँ।
2. बच्चे सामूहिक रूप से कहानी बनाएँ। बच्चे एक गोले के चारों ओर घूमते चलें। हर बच्चा एक वाक्य जोड़ता चले जब तक कि कहानी पूरी नहीं हो जाती।
3. एक बच्चे को कुछ गायब शब्दों (खाली स्थानों) के साथ एक कहानी

दी जाती है। पर उसे यह बता दिया जाता है कि गायब शब्द व्याकरण की दृष्टि से भाषा के कौन-कौन से अंग होने चाहिए। बच्चे का एक जोड़ीदार है जिसने कहानी नहीं पढ़ी है। वह अपने जोड़ीदार को भाषा के उस अंग के बारे में बताता है। जोड़ीदार अपनी पसन्द का कोई भी शब्द देता है। आखिर में, वे लोग उस कहानी को पढ़ते हैं जो बहुत मज़ेदार बन पड़ती है। यह गतिविधि सम्पूर्ण वाक्यांशों को खाली रखकर भी की जा सकती है, या फिर यह भी किया जा सकता है कि बच्चे अपने आप खाली स्थान भरें।

4. शिक्षक और विद्यार्थी एक किताब रचने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। यदि विद्यार्थी कोई दूसरी भाषा सीख रहे हों, तो सम्भवतः बच्चों की परिचित कहानियों में से किसी एक कहानी का दूसरी भाषा में पुनः वर्णन किया जा सकता है। या फिर पूरी कक्षा मिलकर खाने की कोई चीज़ बनाने या कहीं घूमने जाने जैसा काम कर सकती है। कुछ अपने अनुभव लिखकर, कुछ चित्र बनाकर एक किताब बना सकते हैं।

बाहर खेले जाने वाले खेल

1. गोल-गोल रानी कितना-कितना पानीः बीच में मौजूद व्यक्ति यह बताते हुए उत्तर देता है कि पानी कितना ऊपर है। वे लोग जो पानी की सीमा के नीचे होते हैं "डूब" जाते हैं और उन्हें गोले के बाहर दौड़ना पड़ता है। यदि रानी किसी धावक को पकड़ लेती है, तो अगले दौर के लिए उसे बीच में रहना पड़ता है।

चित्रः अतनु राय

2. घोड़ा बादाम छाई... : बच्चे एक गोला बनाकर बैठते हैं। एक बच्चा गोले के बाहर उसके चारों ओर रूमाल लिए हुए चलता है। बाहर वाला बच्चा किसी एक के पीछे रूमाल रख देता है। अब उस बच्चे को उठकर इस बाहर वाले का पीछा करना होता है। बाहर वाला बच्चा गोले में खाली हुई जगह में बैठ पाए इसके पहले रूमाल रखने वाले बच्चे को उसे पकड़ना होता है। यदि वह उसे नहीं पकड़ पाता है तो रूमाल लेकर गोले के चारों तरफ घूमने की बारी अब उसकी होती है।

विविध

1. ढाँचे बनानाः एक बड़ा वर्गाकार गत्ता लें और उसमें जाली के आकार में समान दूरी पर छेद करें। इसके बाद बच्चे पूरे गत्ते में लम्बे और मोटे धागे से बुनाई करें।

2. जिगसॉ या चित्रखण्ड पहेलियाँः ये पाँच टुकड़ों से मिलकर बनने वाली एक वस्तु की पहेली से लेकर एक पूरे दृश्य की 300 टुकड़ों वाली पहेली तक हो सकती हैं। बच्चे चित्रखण्ड पहेली को हल करने के लिए समूहों में काम करने का भरपूर मज़ा लेते हैं।

3. स्पर्श गतिविधि-1ः अलग-अलग तरह की ऊपरी सतहों वाली वस्तुओं को एक बस्ते में रखें और फिर बिना देखे हाथों से इन्हें महसूस करें। इन्हें छूने पर होने वाले विभिन्न संवेदनों की चर्चा करें तथा अनुमान लगाएँ कि वह क्या चीज़ है।

4. स्पर्श गतिविधि-2ः बच्चे वर्णमाला के अक्षरों को रेगमाल में से काट सकते हैं, कीचड़ में अक्षरों को लिख सकते हैं और रस्सी को अक्षरों का आकार दे सकते हैं। यह गतिविधि बच्चों को वर्णमाला के अक्षर सिखाने के साथ ही उन्हें खुरदरी, उभरी और धँसी हुई सतहों के बीच अन्तर करना सिखाने में मदद करती है।

प्रस्तावित किताबें ....

नर्सरी से केजी II

चित्रकथाएँ ....

1. आम की कहानी
2. रेलगाड़ी चले छुक-छुक
3. बारात
4. इनकी दुनिया
5. आज़ाद करो
6. क्या सही क्या गलत
7. घर और घर
8. रसोईघर
9. दीवाली

कहानियाँ ....

10. लालू और पीलू
11. चूहे को मिली पेंसिल
12. मेरा भाई है
13. हमारा प्यारा मोर
14. छोटा शेर बड़ा शेर
15. मीनू और पूसी
16. मेरी बगिया
17. चिड़ियाघर की बत्तख
18. हलीम चला चाँद पर
19. मेरा परिवार
20. मैं भी...
21. दो तोते
22. होली
23. बस
24. माँ की साड़ी
25. मुन्ना
26. नानी की आँखें
27. तीन साथी

लम्बी कहानियाँ ....

28. नाव चली
29. हीरा
30. पेड़
31. खिलखिल तोता
32. मुझे सोना है
33. किसने खाए मालपुए
34. मैं भी...
35. रंगबिरंगा राजस्थान
36. सागर
37. सोनाली का मित्र
38. एक दिन
39. बिल्ली के बच्चे
40. बिल्लियों की बारात
41. रंगबिरंगी दुनिया
42. पतंग के पेंच
43. नीना की नानी
44. नन्ही चींटी
45. गुब्बारे
46. कौवे की कहानी
47. बाज़ार की सैर

गीत/कविताएँ ....

48. अक्कड़-बक्कड़
49. कितनी प्यारी है यह दुनिया
50. उमंग बाल कविताएँ
51. नन्हे मुन्ने गीत
52. मेरा शिशु गीत
53. शिशु गीत
54. मधुबन बाल गीत
55. पाजी बादल
56. भालू की हड़ताल

गतिविधि किताबें ....

57. मेज़
58. पत्ते ही पत्ते
59. एक्की दोक्की
60. अनोखी प्रदर्शनी
61. आधे गोल चक्कर
62. बूझो बूझो

जानकारी ....

63. रेलगाड़ी

प्रस्तावित किताबें

64. पानी के उपयोग
65. पूंछ
66. हम हिन्दुस्तानी
67. निराली पोशाक

कक्षा I और कक्षा II

कहानियाँ

1. किसने खाए मालपुए
2. चूहे पार्टी ज़िन्दाबाद
3. प्रणव की तस्वीर
4. चुनमुन और गोपा
5. टिंकू चला नाना के घर
6. सपना का साथी
7. नन्हे सिंह ने दहाड़ना सीखा
8. सोनाली का मित्र
9. दादी की साड़ी
10. मंगू का लट्टू
11. लुढ़कता पहिया
12. नन्हा करमकल्ला
13. चुनमुन आज़ाद है
14. कहानी संग्रह
15. महागिरी
16. बुढ़िया की रोटी
17. चिटकू
18. पेड़ घूमने चला
19. पक्की दोस्ती
20. मेंढक और साँप
21. नानी की खिचड़ी
22. बातूनी कछुआ
23. अप्पू की कहानी
24. एक समय एक गाँव में
25. दुमदार कहानी
26. मोहिनी और भस्मासुर
27. लाल पतंग
28. सूरज और शशी
29. मल्ली
30. दस
31. मुझे सोना है
32. नौ नन्हे पक्षी

फन्तासी किताबें

33. चौदह चूहे घर बनाने चले
34. मीता और उसके जादुई जूते
35. आनन्दी का इन्द्रधनुष
36. जादुई बर्तन
37. मुफ्त ही मुफ्त
38. मोर पंख पर आँखें कैसी
39. छोटा सा मोटा सा लोटा

गीत/कविताएँ

40. महँगू की टाई
41. बादल आए पानी लाए
42. धम्मक धम्मक
43. छुटकी गिलहरी
44. फर फर फर उड़ी पतंग
45. कजरी गाए झूले पर
46. महके सारी गली गली
47. चिड़िया रानी
48. एक थी चिड़िया

गतिविधि किताबें

49. बूझो बूझो
50. मैं तुमसे अच्छा हूँ
51. टोपी
52. फूल
53. माचिस की तीलियों के रोचक खेल
54. हमारी मदद कौन करेगा

जानकारी

55. इन्द्रधनुष पृथ्वी पर उतरा
56. खोजो पहचानो
57. छोटे पौधे बड़े पौधे
58. पानी ही पानी

प्रस्तावित किताबें

कक्षा III और कक्षा IV

कहानियाँ

1. अब्बू खाँ की बकरी
2. मत्स्या
3. बस की सैर
4. छोटी सी एक लहर
5. मेरी कहानी
6. मुनिया ने पाया सोना
7. राजा की मूँछें
8. शोर मचा जंगल में
9. हाथी और भंवरे की दोस्ती
10. रूपा हाथी
11. सोना की कहानी
12. परियों का खेल
13. हमारा प्यारा मोर
14. जादुई बर्तन
15. भोर भई
16. तेरह अनुपम कहानियाँ
17. चालाक किसान और चार ठग
18. मेरी बहन नेहा
19. मिट्ठू के सपने
20. कोई खास बात
21. टॉम और शरारती कौवा
22. मोरा
23. एक समय एक गाँव में
24. बड़ा मूर्ख कौन?
25. क्या तुम मेरी अम्मा हो?
26. बन्दर और भालू
27. अप्पू की कहानी
28. तिली तितली
29. बुढ़िया की रोटी
30. चन्दा मामा का पजामा
31. लाल पतंग
32. ईद
33. गुलाबो चुहिया और गुब्बारे
34. एक दिन प्रिया का
35. बातूनी कछुआ

लोककथाएँ

36. पंचतंत्र की कहानियाँ
37. बोस्की का पंचतंत्र 1, 2, 3, 4
38. मैगनम बुक सेट
    - क. ब्राह्मण और तीन ठग
    - ख. बन्दर और मगर
    - ग. बोलती गुफा
    - घ. चार दोस्त
39. नवनीत सेट
    - क. कहानियाँ ही कहानियाँ
    - ख. मोहक कहानियाँ
    - ग. अनुपम कहानियाँ
    - घ. रंगबिरंगी कहानियाँ
40. लोक कथा

नाटक/पहेलियाँ

41. वर्ग पहेली
42. नजानू के रंग
43. हड्डी

गीत/कविताएँ

44. झाईं झाईं झप्प
45. दौड़ा दौड़ा मन का घोड़ा
46. बीन बजाती बिल्लो रानी
47. सूरजमुखी और तितलियाँ
48. संकट साँप का
59. इन्द्रधनुष
50. गुड्डी
51. फूल और मैं
52. कोरियाई बाल कविताएँ
53. बतूता का जूता

गतिविधि किताबें

54. मेरी दस उंगलियाँ
55. तितलियाँ

जानकारी

56. सारे मौसम अच्छे
57. खिलौनों का बस्ता
58. गली मोहल्ले के कुछ खेल
59. धरती से सागर तक
60. समुन्दर का खज़ाना

मच्छर पहलवान

बात की बात
खुराफात की खुराफात
बेरिया का पत्ता
सवा सत्रह हाथ
उसपे ठहरी बारात
मच्छर ने मारी एड़
तो टूट गया पेड़
पत्ता गया मुड़
बारात गई उड़

- सफदर हाशमी